Subject- Maithili (IInd Semester)
Paper code- CC-6, MTL-522
Topic - Shastr o shaastr
Format - PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile- 9661819662
email- drsudhirkrjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

# शस्त्र ओ शास्त्र

'शास्त्र ओ शास्त्र' शीर्षक एकांकी श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' द्वारा लिखित अछि। एहि एकांकी मे एकांकीकार शस्त्र ओ शास्त्र दुनूक महत्त्वक चर्चा कएलनि अछि। सामान्यत: शस्त्रक महत्त्व तँ युद्ध क्षेत्र मे आ शत्रु सँ रक्षाकाल मे होइत छैक आ शास्त्रक विद्वान लोकनिक समाज मे, परंच आपत्तिकाल मे दुनू एक-दोसराक सहायक होइत अछि। जखन शास्त्रक मर्यादा पर आघात प्रारंभ होइत अछि तखन शस्त्रहि ओकर रक्षा करैत छैक। शास्त्रहु मे कृतघ्नता नहि, ओहो शस्त्र कैं उत्साहित करैत अछि, क्रियाशील बनबैत अछि। युद्ध-कला मे दक्ष वीर पुरुष लोकनि शास्त्रज्ञ लोकनिक प्राण रक्षा हेतु सदिखन तत्पर रहैत छथि। तहिना शास्त्रज्ञो लोकनि शत्रुक आक्रमणक काल वा संकटकालीन स्थिति मे वीर पुरुष लोकनि कैं अपन ओजस्वी भाषण सँ उत्साहित करैत छथि, कर्त्तव्यक बोध दैत छथि। युद्ध-कला मे निपुण केशरकर तथा शास्त्रज्ञ विद्यापतिक भूमिका मे हम एहि बात कैं स्पष्ट रूप मे देखैत छी।

शत्रु-सेना मिथिला पर आक्रमण कएलक अछि। युद्ध विद्या-पारंगत श्रीमन्तकेशरकरक नेतृत्व मे मिथिलाक सेना शत्रु-सेना कैं पराजित कए देलक अछि। शास्त्रो चुप नहि अछि। कवि विद्यापतिक हृदय उत्साह ओ उमंग सँ भरि गेल छनि। ओहो युद्ध करबाक लेल तत्पर छथि। शत्रुक आघात हुनको ऊपर भेल छनि। एकटा घाव नेने, जाहि सँ रक्त बहि रहल अछि, तुर्यनाद करैत ओ महाराज शिव सिंहक समीप अबैत छथि। हुनका सम्मुख उपस्थित भए ओ भाव-निमग्न भए विजयक प्रशंसा करए लगैत छथि—

"एहि विजय दिवसक ई स्वर्णिम क्षण कतेक मोहक अछि। मिथिलाक विजय-केतु सगौरव आकाश मे लहरा रहल छैक। बलिदानी देशभक्त लोकनिक रक्त सँ लाल कमला, गंडकी आ वागमती, हरित वसुन्धराक कागत पर शतधारा अक्षर-पंक्ति मे विजय-गाथा लिखि रहल अछि।"

ओज सँ भरल हुनक एहि वाणीक श्रवण कएला उत्तर केशरकरक मोन मे शंका भए जाइत छनि। हुनका विचारेँ विद्यापतिक उपस्थित होएब उचित नहि। तेँ हुनका बंदी बनएबा लेल ओ महाराज सँ आज्ञा मंगैत छथि। ओ हुनका सँ कहैत छथि— "राष्ट्र कैं प्रेरणा देनिहार व्यक्ति कैं की अधिकार छनि जे ओ अपना जीवन कैं संकट मे राखि कऽ युद्धरत भऽ जाथि? राष्ट्रक धरोहरि कैं सुरक्षित रखबाक चाही।" केशरकर देशभक्त छथि। ओ देशक हानि नहि देखए चाहैत छथि। आ हुनका दृष्टि मे विद्यापति देशक गौरव छथि, तेँ ओ हुनका सुरक्षित देखए चाहैत छथि। हुनका मोन मे ई शंका उठि गेल छनि जे जैं विद्यापति कैं किछु भए जाइनि तेँ राष्ट्रभक्त लोकनि कैं के प्रेरणा देत, उत्साहित करत? ओ विद्यापति कैं राष्ट्रक धरोहरि मानैत छथि।

Scanned with CamScanner

देशभक्त केशरकर दुर्वृत्त एवं मिथ्याभिमानी मुसाइ झाक क्रूर आक्रमण सँ विद्यापतिक रक्षा करैत छथि। विद्यापति मुसाइ झाक संग वाद-विवाद मे फँसि जाइत छथि। विद्यापतिक तर्कपूर्ण आदर्श विचारक सम्मुख मुसाइ झाक तर्कहीन विचार प्रभावहीन भए जाइत अछि। वाद-विवाद मे मुसाइ झा पराजित भए जाइत छथि। पराजित भेला उत्तर ओ क्रोधावेश मे आबि जाइत छथि। क्रोधान्ध भए ओ बजैत छथि– " प्रतिवादी भयंकर मुसाइ झा तोहर छातीक हड्डी तोड़ि कऽ तोरा बालचन्द्र देखा देथुन्ह।" क्रोध सँ जरैत ओ विद्यापति पर प्रहार करए चाहैत छथि। केशरकर विद्यापतिक पाछाँ उपस्थित छथि। ओ मुसाइ झाक षड्यंत्रक विषय मे जनैत छथि। ओ विद्युत जकाँ फड़कि कए वेग सँ तरुआरि खीचैत आगाँ आबि कए तरुआरिक नोंक मुसाइ झा दिस इंगित करैत छथि। उत्तेजित केशरकर बजैत छथि– " सैनिकक भाषा मे एकरे बालचन्द्र कहैत छैक। पंडितप्रवर! शास्त्रार्थ तर्क सँ होइत छैक, बल-प्रयोग द्वारा नहि। हमरा संग्राम जड़ मे एहि षड्यंत्रक गन्ध लागल आ महाराज कें सूचना पठा बाणवेग सँ जागि गेलहुँ। एहन समय पर अयलहुँ जे तँ कनेको विलम्बें शारदक ज्योति कें अहाँ मिझा दितहुँ। बाजू मुसाइ झा, अहाँक प्रच्छन्न हत्यारा संगी लोकनि? बजा लियऽ हुनका लोकनि कें।" केशरकरक वाणी आ क्रिया ई सिद्ध कए दैत अछि जे शस्त्र शास्त्रक रक्षक अछि, शस्त्र चलएबा मे दक्ष वीर पुरुष लोकनि सभ शास्त्रक ज्ञान रखनिहार शास्त्रक आदर्श नीतिक अनुसार चलनिहार लोकनि सँ विशेष प्रेम रखैत छथि।

विवेच्य एकांकी मे एकटा ओहो स्थल ध्यातव्य अछि जतए एकांकीकार शस्त्र आ शास्त्रक प्रति अनुराग रखनिहार लोकनिक हेतु अनुपालनीय नीतिक निर्माण करैत छथि। विद्यापतिक शब्दक माध्यमे ओ कहैत छथि– " संग्राम-जड़क सिंह, शास्त्रार्थ-मण्डप मे प्रतिपक्ष पंडितक वध उचित नहि।" पुनि ओ केशरकरक शब्दक माध्यमे कहैत छथि "ओ पंडित नहि थिक, हत्यारा थिक। ओ षड्यंत्र करबाक अछि।" पंडित कें सदाचारी भऽ कऽ रहबाक चाही। ओ कोनो षड्यंत्र करए से उचित नहि।

Scanned with CamScanner